जनसंख्या नियंत्रण की जरुरत

हम ही हम गली मोहल्लों नुक्कड़ पर बात कर रहे हैं पॉपुलेशन की, जिनके कुछ करने से
फर्क पड़ता है वो चुप है, भारत की टॉप १०० कंपनियां कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी
इसको समझना पड़ेगा कि देश में चल क्या रहा है, इंडस्ट्री को चाहिए सस्ते मजदूर और
रेडी खड़ा हुआ कस्टमर, जितनी जनसंख्या बढ़ेगी उतना ही प्रॉफिट बढ़ेगा, पूरे के
पूरे बड़े-बड़े देश जनसंख्या में हमारे छोटे-छोटे राज्यों के बराबर है, टोटल
फर्टिलिटी रेट गिर उन राज्यों में रही है जहां जनसंख्या ऑलरेडी कम है, उससे फर्क
नहीं पड़ता, चीन को एक बच्चे की पॉलिसी के बावजूद ३५ साल लग गए पॉपुलेशन पूरी तरह
कंट्रोल करने में, २०७० तक हम १७० करोड़ होंगे उसके बाद बढ़ना रुकेंगे, तब तक तो
बंटाधार हो जाएगा, एक पूरी की पूरी सूडो इंटेलेक्चुअल गैंग देश में है जो पॉपुलेशन
की बात करते ही सिंगापुर की डेंसिटी बताने लगती है, वहां थूकने पर भी जुर्माना है
१०० प्रतिशत लिटरेसी है, हम सिंगापुर नहीं है, यह एक सामान्य बात है कि धरती सीमित है, उसके
खनिज सीमित हैं, पानी सीमित है, साउथ अफ्रीका वर्ल्ड क्लास सिटी जोहानसबर्ग में
पानी खत्म हो गया है, जंगल सीमित है, रोजगार सीमित है और जनसंख्या असीमित बढ़ रही है
तो फिर टॉप पूंजीवादी वर्ग ने क्या मजे लिए, जो रिसोर्स हैं जमीन, खनिज, उपज, जंगलात
सबको धीरे-धीरे अपने पास कर लिया, अब लोग चाटे मार मार कर पढ़ाते बच्चे को कि बेटा
पढ़ नौकरी लग, और वो बना बौद्धिक मजदूर तो बौद्धिक मजदूर ज्यादा अवेलेबल हो गए
मार्केट में, तो फिर तनखा कम मिलेगी, काम के घंटे ज्यादा होंगे, अब वह महीना महीना साल
दर साल बचत कर गया उसी पूंजीपति के पास कि भैया सर छुपाने की जगह दे दो, उसने पूरी
जिंदगी की उसकी कमाई ली और दो कमरे दे दिए दसवीं मंजिल पर, जब जनसंख्या विस्फोट होगा तो
संसाधानों की कमी रहेगी, जिसने संसाधान हड़प लिए वो बाकी का शोषण करेगा रेट बढ़ते
रहेंगे, अब एक बड़े फ्लैट की कीमत शहर में इतनी बढ़ गई है कि कोई ५०००० महीना कमाता
है, वो आधी तनखा बचाता जाता है, तो भी २० साल लगेंगे उसे एक छत लेने में, इज दिस
नॉर्मल नो, एक बहुत बड़ा वर्ग बन गया है देश में जो कुछ नहीं करता, रिसोर्सेस को
इकट्ठा करके रखता है, थोड़ा-थोड़ा निकालता रहता है नए रिसोर्सेस कब्जे में लेता रहता
है, तो ज्यादा पॉपुलेशन से नुकसान किसका हुआ, उसी का जिसने पॉपुलेशन बढ़ाई यानी
लोअर इकोनॉमिक क्लास, पहले तो गांव में इतने ज्यादा बच्चे हो गए हैं कि जमीन
बंटते बंटते रह गई एक बेटे के दो-तीन बीघा, वे सब शहर भाग आए सरकारी नौकरी ढूंढेंगे
एजुकेशन सिस्टम बना ही पढ़ा लिखा नौकर बनाने के लिए है तो वो भी क्या करें, बाप

पैसे दे देकर गांव में गरीब हो गया, शहर के शहर भर गए कोचिंग करने वाले लड़कों से, कुछ
की नौकरी लगेगी, बाकी ये फसल तैयार हो गई सस्ते मजदूरों की शहर में, शारीरिक मजदूर
कम दाम में फैक्ट्री दुकान में काम करेंगे गार्ड बनेंगे, जो बौद्धिक मजदूर बनेंगे वह
किसी कंप्यूटर कंपनी में लाइन से बैठ जाएंगे और उन्हें कहा जाएगा सप्ताह के ७०
घंटे काम करो तो अल्टीमेटली सब पूंजीवादी सिस्टम के काम आ गए, अब इतनी भारी जनसंख्या
से लैंड वाटर एयर पोलूशन होगा, लोग मरेंगे लेकिन महंगी गाड़ियों में एयर प्यूरीफायर
लगा होता है, उधार फर्क नहीं पड़ता लॉ एंड ऑर्डर प्रॉब्लम तो लोअर और मिडिल क्लास की है
जिसकी १० फिट की ऊंची दीवारें मकान की हो बाहर गार्ड हो, उसको क्या फिक्र, क्या आपके
आसपास आपने ऐसा बड़ा पूंजीपति देखा है जिसके पांच सात बच्चे हैं, भाई उनको तो
बेस्ट मेडिकल सुविधा है, खुद के हॉस्पिटल है, कर लो नहीं नहीं करते बच्चे वो ज्यादा
बच्चे हैं बिल्कुल गरीब के और बड़े होकर एक दूसरे से लड़ रहे हैं बाप का बुढ़ापा
खराब हो रहा है, अब पता नहीं ये वीडियो कहां तक पहुंच पाएगा पर आज के समय में अगर
कोई लोअर इकोनॉमिक क्लास का आदमी एक दो बच्चे से ज्यादा कर रहा है तो वह डॉक्टर
इंजीनियर पैदा नहीं कर रहा, वह कोई सुखी जीवन की नीव नहीं रख रहा, सिस्टम के लिए
सस्ते मजदूर पैदा कर रहा है, वह ऑलरेडी समाज के पिछड़े वर्ग से हैं और गरीब भी
हैं, उन पर दोहरी मार है, इतना ज्यादा ऑटोमेशन मशीन लर्निंग रोबोटिक्स और
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आ गया है कि नौकरियां का धीरे-धीरे सिनेरियो बदल जाएगा
अब एक ऐसा वर्ग है जो कहता है कि हाथ की मेहनत से कमाते हैं
उसको कोई पट्टी पढ़ा देता है कि दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम, हम तो अपना
कमा के खाते हैं जी, सरकार थोड़ी देती है, अब कोई पंचर बनाने वाला सोच रहा मैं तो
अपने चारों बच्चों को पंचर का काम सिखाऊंगा १०-२० साल में ऐसे टायर आ जाएंगे कि पंचर होगा ही नहीं,
लेकिन देश का पूरा निचला और मिडिल तबका एक पूंजीवादी षड्यंत्र का हिस्सा बन गया है, और किसी ने
जान बूझकर ऐसा षड्यंत्र नहीं किया, जो पूंजीवादी मानसिकता का है उसके अवचेतन मन में है कि
जनसंख्या बढ़ती रहे तो जो उसने दर्जन भर प्लॉट खरीद रखे हैं, उनकी कीमत बढ़ती रहे
प्रोफेसर दास गुप्ता कैंब्रिज यूनिवर्सिटी की स्टडी ने बताया कि पृथ्वी केवल ५०
करोड़ या ज्यादा से ज्यादा ५०० करोड़ लोगों को ही सह सकती है, बॉस ऑलरेडी ८००
करोड़ लोग इस दुनिया में हैं जिसमें से ३२५ करोड़ चीन भारत बांग्लादेश और
पाकिस्तान में ठुसे पड़े, १०० करोड़ लोग हर रात इस दुनिया में भूके पेट सोते हैं, यह
पृथ्वी को तबाह करने का फार्मूला है, हजार प्रकार के पेड़ पौधो या जानवर हमेशा के
लिए खत्म हो रहे दुनिया से, हर साल क्योंकि आदमी ज्यादा हो गए हैं, पिछले ५० साल में
से फैलने वाले इबोला वायरस मार्ग बर्ग वायरस नीपा वायरस हेंडरा वायरस सार्स

मेर्स सब फैल गए क्योंकि हम उनके घरों तक पहुंच गए और उन्होंने टेंशन में आके पेट
का वायरस मुंह से छोड़ना शुरू कर दिया हम ही हम खाएंगे पिएंगे पृथ्वी का नाश करेंगे
और निकल लेंगे गरीबी बेशुमार है सरकारी नौकरियां कोई भी सरकार हो इतने करोड़
बेरोजगारों को नौकरी दे ही नहीं सकती माल्थस थ्योरी है जनसंख्या संसाधानों से
ज्यादा तेजी से बढ़ती है और वही बीमारी भुखमरी बाढ़ सूखे क्लाइमेट चेंज का कारण
बनती है क्योंकि प्रकृति जनसंख्या कम करने की कोशिश करती रहती है इतना ज्यादा
एनवायरमेंटल डिग्रेडेशन हो गया है कि एक स्टडी के अनुसार इंडिया बनने जा रहा है
कैंसर कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड इतने सघन लोग बसे हुए हैं कि पेंडेमिक कभी भी फैल सकता है
वाटर टेबल नीचे जा रही है नदियां सूख रही हैं जमीन इतने सारे लोगों के लिए
फर्टिलाइजर पेस्टिसाइड डाल डालकर कब तक अन्न उगा पाएगी धरती अल्टीमेटली बंजर हो
जाएगी फिर भी लोग बोलते हैं कि बूढ़े ज्यादा हो जाएंगे इकॉनमी गिर जाएगी बच्चे
पैदा करो जवान कम होंगे तो बूढ़ों को कौन संभालेगा कभी तो ऐसा होगा ना कि जवान कम
होंगे कब तक हम जनसंख्या बढ़ाएंगे हैप्पीनेस इंडेक्स में देश १२६ वें नंबर
पर है १४६ में से इकॉनमी डेवलप हो रही है इंडिया की पर लोग
दुखी हैं लोग बिना डेवलपमेंट के भूटान में खुश हैं ऐसी तरक्की जो भारी गरीब जनसंख्या
के बल पर हो उसका क्या फायदा अगर हम खुशी नहीं है जनसंख्या ज्यादा होने से जो
इकोनॉमिक राकी में जितना ऊपर होगा उसका उतना ही फायदा होता है जो मिडिल क्लास है
लो क्लास है उसका उतना ही भारी नुकसान है वो बेवकूफ अगर एक दो बच्चे से ज्यादा कर
रहे तो अपने पांव पर कुल्हाड़ी मार रहे अब जो जनरेशन पैदा हो रही अल्फा जनरेशन इनको
नाम दिया गया है यह वो वाली जनरेशन नहीं बनेगी कि मेरे मां-बाप मेरे देवता है मेरा
पति मेरा देवता है ऊपर वाला खाने को देगा ये इंटरनेट जनरेशन बड़े होकर सवाल पूछेगी
कि खाने पीने को नहीं था तो पैदा क्यों किया था ऐसे एक्स्ट्रा बच्चे किसी ना किसी
चालाक आदमी के धार्मिक आर्थिक जातिगत या राजनीतिक षड्यंत्र करने के काम आते हैं
सरकारी नौकरी में कंप्यूटराइजेशन और ऑनलाइन के बाद इतने सारे लोगों की जरूरत
ही नहीं है वैकेंसी दिखेगी पर भरी नहीं जाएगी धीरे-धीरे कम की जाएंगी
कम लोगों में जो बटेगा रिसोर्सेस का रेवेन्यू तो ज्यादा हिस्से में आएगा जो
एक्चुअल वेल्थ है वो तो धरती की ही वेल्थ है चाहे जमीन हो उसकी उपज हो खनिज हो वही
इनडायरेक्ट तरीके से सब में बटनी है १४० करोड़ लोग केवल ३५ ओलंपिक मेडल ला पाए
ह्यूमन रिसोर्सेस डेवलपमेंट में हम है १३४ वे नंबर पर बस जनसंख्या में नंबर वन है
जीवन का एकमात्र उद्देश्य बन गया है एक छोटी नौकरी पाना ऐसा हुआ क्योंकि
रिसोर्सेस बढ़ते बढ़ते इतने कम रह गए कि अब मिडिल क्लास आदमी के लिए रोटी कपड़ा

मकान का इंतजाम भी मुश्किल हो गया जो बिल्कुल ऊपर बैठा वर्ग है इकॉनमी का उसको भारी मजा आ रहा है जनसंख्या बढ़ने से उसके बच्चे तो विदेशों में पढ़ रहे हैं डुअल सिटीजनशिप ले रहे हैं वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कुछ हुड़दंग करके ना कभी कानून बनने देगा ना ही यह काला सच बाहर आने देगा कि पूंजीवादी मानसिकता की उपज है ये कहना कि ज्यादा से ज्यादा लोग देश के लिए अच्छे हैं ये आप और मेरे जैसे लोगों को ही देश क्षेत्र में बात को आगे पहुंचाना पड़ेगा कि बस करो यार!

कंस्पिरेशन के तहत एक ऐसा झूठ स्ट्रेटजिकली फैलाया जा रहा है कि देश की जनसंख्या २.१ २.२ प्रतिशत के आसपास से बढ़ रही है जो कि रिप्लेसमेंट दर है इसका मतलब ऑल इज वेल, हम रुक गए सफेद झूठ ऐसे नहीं होता पिछला सरकारी सेंसस हुआ था २०११ में उसके बाद हुआ ही नहीं चीन ने १९७९ में एक बच्चे की पॉलिसी इंप्लीमेंट की सबको पता है, सीधा एक बच्चा केवल उसके बावजूद साल दर साल दर साल जनसंख्या बढ़ती रही वहां ४३ साल बाद ० प्रतिशत बढ़त पर पहुंची २०२२ में ९६ करोड़ से बढ़कर १४२ करोड़ तक पहुंच कर रुकी है केवल २०२३ से घटना शुरू हुई वो भी आज तक केवल ७ लाख यानी १४१ करोड़ का केवल .०३ प्रतिशत ऐसा इसलिए होता है कि जब जनसंख्या कम बढ़ती है तो संसाधान बच जाते हैं हेल्थ केयर अच्छा होने से आयु बढ़ती है बहुत सारी बच्चियां जो अभी छोटी थी फर्टाइल एज में करीब एक दो दशकों तक आती रहती है कई घटक एक दूसरे से इस तरह जुड़े होते हैं कि बहुत धीरे-धीरे फर्क पड़ता है चाइना के ग्रामीण इलाकों में छूट भी दी गई थी कई लोग माने भी नहीं चीन भारत से तीन गुना बड़ा है, वहां भी बेतहाशा गरीबी थी चीन ने पॉपुलेशन कम करने से जो फ्री हुए रिसोर्सेस थे उनको ग्रोथ में लगाया सारा का सारा फोकस मैन्युफैक्चरिंग करने पर था क्योंकि ये लेबर इंटेंसिव होता है और जवान लोगों को भारी तादाद में इस तरह काम मिला यह एस्टीमेट है प्यू रिसर्च का कि अगर एक बच्चे की स्ट्रिक्ट पॉलिसी इंडिया में लागू हो तो भी पॉपुलेशन गिरना शुरू होगी २०४५ के बाद एक बच्चे की स्ट्रिक्ट पॉलिसी तो लागू होती दिख नहीं रही तो अगर आज जैसे ही ट्रेंड चलता रहता है मार्जिनली कमी वाला तो हम पहुंचेंगे १७० करोड़ २०७० में फिर बढ़ना रुकेंगे १७० करोड़ पर तो देश हाफ जाएगा वहां तक पहुंचने से पहले हमें रुकना है और रिवर्स गियर लगाना है तो फिर ये कौन लोग हैं जो जापान की पॉपुलेशन कोलेप्स बताते रहते कि कोई पॉलिसी बन ना जाए यह वो लोग हैं जिनका फायदा हो रहा है जनसंख्या विस्फोट से जापान द्वितीय विश्व युद्ध हारा बर्बाद हो गया तब जनसंख्या वृद्धि दर थी ४ प्रतिशत देशभक्त जापान के लोग

बुरी तरह मेहनत में लग गए वापस जापान को बनाने में जवान लड़के लड़कियों और सरकार
का ध्यान राष्ट्र निर्माण पर था ना कि बच्चे पैदा करने पर १० साल में जनसंख्या
दर रह गई आधी लेकिन जापान डेवलप हो गया, ६० साल बाद जनसंख्या अब जाकर कम होना शुरू
हुई है और अगर जापान ने ध्यान नहीं दिया तो ६० साल बाद यह रह जाएगी आज के १२ करोड़
की जगह ७ करोड़ शून्य तब भी नहीं होगी दक्षिण कोरिया था बेहद गरीब १९६२ से १९८०
का दौर कहा जाता है द कोरियन मिरेकल २.२६ से घटकर जनसंख्या बढ़त रह गई केवल
१.१५ प्रतिशत और साउथ कोरिया बन गया दुनिया का एक डेवलप्ड जैसा नेशन अब जाकर २०२१ से
जनसंख्या वहां घटना शुरू हुई और ४ साल में कितनी घटी केवल १ लाख इन छोटे-छोटे देशों
ने जनसंख्या कंट्रोल करी और डेवलप्ड हो गए एक कीमत चुकानी पड़ती है डेवलपमेंट के लिए
इन्होंने चुकाई पॉपुलेशन कोलेप्स एक आर्थिक दृष्टिकोण से व्यापार कम होने
होने वाले नुकसान का डेवलप्ड नेशंस का पैनिक बटन है दुनिया के
२५ देशों में टोटल फर्टिलिटी रेट चार से ऊपर है जी हां चार से ऊपर और यह सब
बिल्कुल गरीब देश है ले आओ वहां से भर भर के यह कोलेप्स की बातें करते छोटे-छोटे
पॉपुलेशन के देश हैं खूब सारी जमीन है संसाधान है पेड़ से फल गिरकर सड़ रहे हैं
तो आदमी यही बोलेगा ना कि बढ़ाते रहो रोज हमारे यहां रोज फल खाना भी लगजरी है पूरी
पृथ्वी की मैक्सिमम कैपेसिटी से ३०० करोड़ ज्यादा है पॉपुलेशन पृथ्वी पर अरे कहीं कम
नहीं हो जाए आगे जाके अरे कम नहीं हो जाए इकॉनमी गिर जाएगी बोल बोलकर गरीबों की
झुग्गियां डालते रहना भी तो इंसानियत नहीं है अरे नहीं फिर जापान जैसे बुड्ढे लोगों
की प्रॉब्लम हो जाएगी पर यह जापान जैसा छोटा सा देश ५८ ओलंपिक मेडल लाया
खुद के देख लो कितने आए इस हिसाब से तो ज्यादा और ज्यादा बढ़ाते रहो कभी तो कहीं
ठहरने की कहीं रुकने की सोच रखनी पड़ेगी वापस रिसेट करना पड़ेगा मानव को आर्थिक
जगत द्वारा एक संसाधान मान लेना सबसे बड़ी भूल है व्यापार के फायदे से भी ऊपर कुछ है
हमें किसी ने रोका था क्या कि सबको शिक्षित कर दे हम नहीं कर पाए हमें किसी
ने रोका था क्या कि चाइना की तरह मैन्युफैक्चरिंग पर ध्यान दे पिछले ५० साल
में ताकि सारी लेबर फोर्स खप जाए हम नहीं कर पाए अब सर्विस सेक्टर में में एक कंपनी
अरबों रेवेन्यू बना रही पर रोजगार तो लिमिटेड ही दे पाएगी नौकरियां तो
मैन्युफैक्चरिंग से बढ़ती हैं हमें तो जनसंख्या ही रोकनी पड़ेगी और साथ
मैन्युफैक्चरिंग को बूस्ट देना पड़ेगा हमें केवल जिंदा नहीं रहना जीना भी तो है
दुनिया के जानेमाने सोशल साइकोलॉजिस्ट थे तुर्की के मुजाफर शरिफ जिन्होंने रॉबर्ट्स
केव एक्सपेरिमेंट के बाद रियलिस्टिक कनफ्लिक्ट थ्योरी दी कि अलग-अलग सामाजिक
समूह जो असल में शुरुआत में एक ही होते हैं वह

यह समझने लगते हैं कि वह अलग-अलग लोग हैं अगर संसाधान कम हो तो संसाधानों के लिए बहुत
संघर्ष करते हैं अब राजनीति आसान हो गई देश में अपने अपने सामाजिक समूह पकड़ने
हैं उन्हें बताना है कि उन्हें ज्यादा फायदा मिलेगा आरक्षण मिल सकता है सब्सिडी
मिल सकती है अगर मुझे वोट देंगे हमें उनके वोट नहीं चाहिए वह हमारे लोग नहीं हैं ऐसा
बोल-बोल कर विघटन करते रहो इससे भी काम ना बने तो जनसंख्या विस्फोट के कारण जो
गरीब लोग हैं उधार पैसा बटवा दो पैसा एक संसाधान ही है दारुडों को दारू बटवा दो
संसाधानों को बांटने की अलग-अलग तरह की मनमोहक घोषणाओं से स्टेट इलेक्शन चलते
रहते गरीब अपनी जिंदगी के संघर्ष में इतना उलझ गया है कि वह अपने बच्चों पर ही ध्यान
नहीं दे पा रहा तो देश की क्या खाक सोचेगा आप सोच आप पढ़े लिखे हैं सुन रहे हैं क्या
कोई मजदूर इसे सुनेगा वो लोकल गाने सुनेगा अब अलग-अलग धर्म के लोगों ने चढ़ाई कर दी
मुझ पर पिछला मेरा वीडियो देखकर हम कम हो जाएंगे हम हम ज्यादा हो जाएंगे एक बहुत
फटे पुराने गंदे कपड़े पहने बदबूदार आदमी एक डॉक्टर के पास आया डॉक्टर ने नाक बंद
कर कहा बाहर से बात करो उसने कहा जी मैं १० साल पहले शहर में आया था तब बुखार आ
गया था डॉक्टर साहब तब आपने कहा था नहाना मत तो अब नहा लू क्या सारे धार्मिक ग्रंथ
एक परिपेक्ष एक समय के अनुसार थे उन्हें क्या पता था इंसान इतना पागल निकलेगा अब
यमुना जी में डुबकी कैसे लगे जब केमिकल के जहरीले झाग मौजूद हो जनसंख्या विस्फोट के
कारण भाई इच्छा तो मेरी भी है कि मैं मेरे धर्म को आगे बढ़ाऊ स्वर्ग जाऊं मरने के
बाद दूध घी की नदियों में पड़ा रहूं पीता रहूं पर उसको ढूंढ रहा जो मरकर वापस आया
हो आज तक तो कोई मिला नहीं तो मरने के बाद की जिंदगी के लिए मैं पहले इस जिंदगी को
नरक बनाऊं होना तो यह चाहिए कि इस जिंदगी को अच्छे से जिऊं और इसके बाद भी स्वीडन
दुनिया का सबसे खुश और जबरदस्त देशों में है ३४ प्रतिशत लोग धर्म नहीं मानते लो
पॉपुलेशन ग्रोथ फिर भी लोएस्ट क्राइम रेट दुनिया में होटल जैसी जेलें बंद हो गई हैं
कई रिफ्यूजी तो इसलिए घुस रहे कि वहां की जेलें भी स्वर्ग जैसी है मैं धार्मिक लीडर
हूं मुझे तो अच्छा लगेगा ना कि खूब सारे गरीब बेरोजगार हो गरीब अनपढ भीड़ अगुवाई
करने वाले की ताकत होती है कोई क्यों चाहेगा कम हो जिसको सस्ते मजदूर और रेडी
कस्टमर मिल रहे हैं वो पूंजीपति क्यों चाहेगा कम हो जिसकी रेंटल और प्रॉपर्टी
रेट दौड़ रही है वो क्यों चाहेगा कम हो एक और पक्ष यह है कि बहुत से जोड़े तो इसी
में महानता समझते हैं कि हमने गर्भ निरोधक सामग्री इस्तेमाल नहीं की और खूब पैदा किए
और फिर बच्चों पर मां-बाप ध्यान नहीं दे पाते और उनके असामाजिक होने का खतरा बढ़
जाता है मां-बाप को पता ही नहीं लड़का क्या कर
रहा है बाहर बस रात को काउंटिंग करके सो जाते हैं तो ऐसे पैदा करने में क्या

महानता है सही पालने में महानता है हर जानवर और यहां तक कि कीड़े मकोड़े भी
बच्चे पैदा कर लेते हैं हमें इतना जाहिल भी नहीं बनना है कि जनसंख्या विस्फोट कर
अपनी ही बर्बादी का जश्न मनाने लग जाएं विदेशी शक्तियां भी क्यों चाहेंगी कि
हमारा जीवन अच्छे से गुजरे पड़ोसी खुद बर्बाद होकर बैठा है टोटल फर्टिलिटी रेट
है तीन से ऊपर पाकिस्तान में मैंने पिछले वीडियो में बताया था माल्थुसियन थ्योरी वो
ऑपरेट हो गई अब परमानेंट कटोरा उनके हाथ में आ गया और इधार हम पॉपुलेशन ओलंपिक्स
में नंबर वन आ गए उसकी जल गई इसकी जल गई अरे भाई धरती जल गई क्लाइमेट चेंज से
जनसंख्या रोको ग्लेशियर पिघल रहे हैं मालदीव और बहुत से टापू दुनिया के नक्शे
से खत्म हो जाएंगे ७५ साल में किसी को फिक्र नहीं सब मरने के बाद अपने अपने धर्म
की दूध दही की नदी में कूदने को तैयार दुनिया के १० सबसे गरीब देश की
लिस्ट यह है कम से कम ३.६ और ज्यादा से ज्यादा ६.७ प्रतीशत टोटल
फर्टिलिटी रेट समझ में आ रही मेरी बात यह अमीर मुल्कों को सूट करता है वह इनको
गुलाम सा बना लेते हैं थोड़ा सा पैसा देकर रिसोर्सेस तो हर देश के लिमिटेड ही हैं
जहां संसाधान ज्यादा हैं लोग कम हैं उतने ही अमीर और खुशहाल हैं जैसे सऊदी अरेबिया
केवल १७ लोग पर स्क्वायर किलोमीटर हैं इसको १७ से ७०० कर दो और वहां भी
सड़कों पर भिखारियों की लाइन दिख जाएगी देखो प्लेटो ने दी थी थ्योरी ऑफ केव उसने
कहा था जो गुफा से बाहर निकल आया और सत्य जान गया वह कितना ही नाच ले गुफा वाला झूठ
ही समझेगा उसमें गुफा वाले की गलती नहीं उसने वही सीखा है मुझे नहीं लगता कोई भी
समूह जिसका फायदा हो रहा जनसंख्या विस्फोट से वह एक सख्त जनसंख्या बिल लाना चाहेगा
भारी गरीब जनता सब्सिडी पर जीती है और वोट देती है वो सब्सिडी बहुत बड़ी मिडिल क्लास
के टैक्स के पैसे से आती है और टॉप पर बैठे पूंजीवादी नोट गिनते रहते हैं इतनी
पॉपुलेशन बढ़ गई कि हम सिस्टम के मोहरे बन गए हैं और हमें पता भी नहीं जब पुराने समय
में कबीलाई संस्कृति थी तो बहुत से बच्चे छुटपन में मर जाते थे बहुत सी माएं
डिलीवरी में मर जाती थी छोटे कबीले पर बड़ा कबीला कब्जा कर लेता था लोग
बीमारियों से मरते रहते थे आज परिस्थितियां बिल्कुल अलग हैं ज्ञान ही
शक्ति है ऐसे वीडियो हमेशा बनते रहेंगे कि पॉपुलेशन अच्छी है कोलेप्स हो जाएगा बढ़ाते
रहो बढ़ाओ लेकिन पॉपुलेशन बिल आगे बढवाना है, जो खेल हमें मोहरा बनकर हो रहा उसे समझना
पड़ेगा यह हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई सब मांग रखें पॉपुलेशन कंट्रोल बिल की!

अभी नहीं तो कभी नहीं जिस जगह पर देश पहुंच गया है सच ना मिडीया बताएगा न इंटलेक्चुअल्स
सब को एक घुट्टी पिला दी गयी है कि जनसंख्या अच्छी है रिप्लेसमेंट रेट पहुंच गयी है नाचो नाचो
मैने अपने पहले दो विडीयो में साबित किया है की कैसे झूठ फैलाया जा रहा है
जॉर्ज ओरविल की एक हास्यव्यंग की किताब है एनिमल फार्म इसमें जब भी कोई जानवर एनिमल फार्म में
समझदारी की बात करता है बहुत सी भेडें लगातार नारे लगाने लगती है और जानवर को चुप करा देती हैं
यह देश भी कुछ ऐसा ही है समझदारी की बात करो और ट्रोल हो जाओ
गरीबी और कुल प्रजनन दर का सीधा संबंध है देश के गैर नवीनकरणीय संसाधान
तो सीमित ही हैं, खर्च करते रहो खत्म हो जाएंगे, जमीन की उर्वरक
क्षमता अब रुक गई है, ज्यादा फर्टिलाइजर पेस्टिसाइड या उन्नत बीज एक सीमा तक ही
खाद्यान का उत्पादन बढ़ा सकते हैं, शहरों में गांव से पलायन अनियोजित कच्ची
बस्तियों को जन्म दे रहा है, पर्यावरण का नाश तो हो ही चुका है, जल थल वायु प्रदूषण
के बाद अब जलवायु परिवर्तन शुरू हो गया है, कई लोग बताने लगते कि विकसित देश ग्रीन
हाउस इफेक्ट ला रहे हैं हम कम ला रहे हैं, अरे हमारी गरीबी तो हमारी समस्या है
दुनिया के सबसे प्रदूषित ५० शहरों में ४२ भारत के हैं बाकी आठ में भी पाकिस्तान
बांग्लादेश चीन के हैं, अब कह दो कि पॉपुलेशन से कोई संबंध नहीं प्रदूषण का
धीमा जहर जहर नहीं लगता पर होता जहर ही है, अगर तुरंत पॉपुलेशन कंट्रोल पर विचार
नहीं करा गया तो ३०-४० साल बाद यह देश रहने लायक नहीं बचेगा, रोकना है पॉपुलेशन को
वाटर प्यूरीफायर के बाद अब एयर प्यूरीफायर घर घर आने लग गए हैं, आपने सुना होगा
बोइलिंग फ्रॉग सिंड्रोम , एक मेंढक को पानी में डालकर धीमी आंच पर गर्म करो वह समझता ही
नहीं है क्या हो रहा है, वह खुद को एडजस्ट करता रहता है करता रहता है और जब पानी
उबलने लगता है तो मर जाता है, समझ जब तक आए देर हो जाएगी, संसाधानों पर जनसंख्या का
दबाव हर तरह की समस्या की जड़ है, अनगिनत तरीकों से समस्याएं आती हैं, ईंट की भट्टी
में कोयला नहीं मिले तो फिर बैन है चाहे पर टायर काट काट के डाल देते, काला जहर घुल
रहा अब जिन्होंने दुनिया नहीं देखी वो थोड़ा कह देंगे नहीं भाई साहब सांस तो वही
लेनी है ना सबको, नहीं नहीं लेनी है, पूरे घर में एयर प्यूरीफायर सिस्टम लग रहे हैं
गाड़ियों में ऑफिस में एयर प्यूरीफायर लग रहे हैं, कंपनी एसी बना रही है हेपा
फिल्टर्स के साथ, देखो जिसके पास मनमान दौलत है वह पूरा नैरेटिव पूरा आख्यान
बदलवा देंगे सन २००० में बोलते थे कि २०४० तक जनसंख्या बढ़ना पक्का रुक जाएगी, ट्रेंड
यह कह रहा है, आज बोल रहे हैं २०६० ६५ ७० तक शायद रुक जाएगी, एक होती है गोबल्स लॉ
एक झूठ को १०० बार बोलो सच लगने लगता है २.१ टीएफआर हो गई रुक गए रुक गए कोई नहीं
रुके , अगले ३० साल तक चांस ही नहीं रुकने का, चाइना १९८० से बढ़ना रुक गया था क्या

जब वन चाइल्ड पॉलिसी लाया था, डाटा देखो यहां तो पॉलिसी नहीं है, तो हम क्या खाक रुकेंगे, नहीं नहीं जब २.१ टीएफआर है तो क्या जरूरत है पॉलिसी की, भाई साहब अगर सच में दो ही बच्चे सबके हो रहे हैं तो फिर इतना तगड़ा विरोध क्यों है पॉलिसी का? सोचो सोचो, हमारे आसपास का पढ़ा लिखा मध्यमवर्गीय देश नहीं है देश बहुत बड़ा है देश में भयंकर बेरोजगारी है, मिडिल क्लास पढ़े लिखे विद्यार्थी प्रतियोगिताओं के भवर में फस चुके हैं, २५ लाख फॉर्म आ जाते, एक नौकरी पाना युद्ध जीतने के समान हो गया उससे पहले एजुकेशन इतनी महंगी हो गई सरकारी कॉलेज में एडमिशन नहीं मिले तो डॉक्टर बनने के लिए चाहिए १ करोड़ रूपए, मजदूर ज्यादा होने से मजदूरी कम हो गई चाहे शारीरिक मजदूर हो या मानसिक मजदूर, स्टॉक एक्सचेंज की चकाचौंध देखने ही नहीं दे रही की इस आर्थिक विकास की कीमत क्या पड़ रही,
इंक्लूसिव ग्रोथ की जगह अमीर और अमीर गरीब और गरीब, अमीर और गरीब की खाई और चौड़ी हो गई उसको देखते हुए मिडिल क्लास के टैक्स के पैसे से सब्सिडी सिस्टम बन गया, यह फ्री वो फ्री , आमदनी की असमानता से दबाव समूह उत्पन्न हो गए जो केवल अपने धर्म अपनी जाति का भला करना चाहते हैं, संसाधानों की कमी से भ्रष्टाचार बढ़ता है अपराध भी बढ़ता है ज्यादा जनसंख्या से केस सालों तक लंबे रहते हैं कोर्ट्स में और जल्दी न्याय नहीं मिल मिल पाता, सारी समस्या ही समस्या है बस मजदूर सस्ते हैं हम इतने ज्यादा हो गए कि पर्यावरण को अपने हिसाब से ढाल लिया है जंगली जानवरों की जगह इंसान के लिए फायदेमंद जानवर बढ़ गए हैं जैसे भेड़ बकरी गाय भैंस मुर्गा सुअर इनके लिए पहले अन्न उगाओ इनको खिलाओ मोटा करो इनका शोषण करो, जंगल साफ कर घर बसा रहे हैं, मधुमक्खी जो परागण प्रक्रिया के लिए जरूरी है कम हो रही, जंगली फूल नहीं और तापमान बढ़ रहा है जितने भी स्तनधारी जीव पृथ्वी पर हैं उनमें से ६० प्रतिशत पाले हुए जानवर हैं ३६ प्रतिशत इंसान है और केवल ४ प्रतिशत जंगली जानवर बचे हैं ७० प्रतिशत पक्षी केवल पोल्ट्री है जब से इंसान पृथ्वी पर काबिज हुआ है तब से ८३ प्रतिशत जंगली जानवर ८० प्रतिशत स्तनधारी जल जीव ५० प्रतिशत पेड़ और १५ प्रतिशत मछलियां खत्म हो गई है, नैसर्गिक प्रक्रियाओं में मानव का हस्तक्षेप धरती को कैंसर देने के समान है, ऐसी ऐसी बीमारियां नई-नई आ गई जो कभी सुनी ही नहीं थी, झूठ फैलाया जाता है एक षड्यंत्र के जरिए कि कम लोग होंगे तो व्यापार का क्या होगा? पहली बात यह है कि लोग कम होंगे तो व्यापार बढ़ेगा क्योंकि दुकानें भी कम होंगी मार्जिन बढ़ेगा सवारी कम होगी तो ऑटो भी तो कम होंगे चौड़ी सड़क पर ईंधन कम खपत होगा फेरे ज्यादा लगेंगे , समाज के हर वर्ग को जनसंख्या कंट्रोल करने से फायदा है सिवाय सबसे ऊपर बैठे बिल्कुल टॉप पूंजीपति के जिसके लिए मनुष्य केवल एक साधन है, यह पता नहीं है कि इंटरनेट पर कई

आर्टिकल्स पूंजीवादी दृष्टिकोण से लिखवाए जाते हैं रिसर्च बहुत सोच समझ के ही कोट करनी चाहिए क्योंकि यह भी करवाई जाती है और अपने फंडेड हाउस से फिर छपवाई जाती है सब आगे कॉपी पेस्ट कॉपी पेस्ट करते रहते हैं इमेच्योर बातें, रिसोर्सेज को मैनेज करना होगा टेक्नोलॉजिकल बदलाव लाने होंगे, पढ़ देते जो लिखा है, यह तो सुन रहे ५० साल से क्या मैनेज हुआ य करना होगा वो करना होगा बस ज्यादा बूढ़े नहीं हो जाए पॉपुलेशन रोको मत षड्यंत्र है, कम एक्सपीरियंस के बात समझ नहीं आएगी कि इस षड्यंत्र की जड़े बहुत गहरी हैं अलग-अलग किस्म की मूर्खता सोची जा रही है विश्व में, गेम थ्योरी में एक प्रॉब्लम आती है दो कार ड्राइवर एक दूसरे की तरफ कार लेकर बढ़ रहे हैं एक सोचता है दूसरा हटेगा दूसरा सोचता है वो हटेगा, कभी-कभी टक्कर हो जाती है, गरीबी बेशुमार है फिर भी फिलिस्तीन की हर महिला की बच्चे देने की दर है साढ़े तीन बच्चे हर महिला के, सोचते हैं बढ़ जाएं इजराइल को खा जाएं, इजराइल ने भी महिलाओं को कह रखा है बच्चे पैदा करो, उनकी प्रति महिला जन्म दर है तीन, अजीब बेवकूफी है ये क्या इतने मनुष्यों की दुनिया में जरूरत है, ७५ साल बाद भी हमारी सरकारी स्कूल्स और जो शिक्षा है वो इतनी लाचार है कि सरकारी शिक्षक अपने बच्चों को प्राइवेट में पढ़ाते हैं, साक्षरता शिक्षा नहीं होती ना सोचने की शक्ति है ना समझने की, बस नौकरी लग जाए, ऊपर से अगर गरीबी भी हो तो इंसान का दिमाग बिल्कुल सुन्न हो जाता है उससे आप आशा ही नहीं रख सकते कि वह रोजमर्रा की जद्दो जहद से ऊपर कुछ सोचेगा, आपको कानून ही बनाना पड़ेगा, अगर आज भी आप दो बच्चों का सख्त कानून बनाते हैं तो भी रोल ओवर इफेक्ट के कारण करीब २०६० के बाद ही पॉपुलेशन बढ़ना रुकेगी थोड़ी-थोड़ी बढ़ती रहेगी फिर जो भी तब जनसंख्या रहेगी मान लो १६० करोड़ वो स्टेबल सी हो जाएगी और हर साल कुछ कुछ लाख घटना शुरू होगी यही चाहिए सिस्टमिक कंट्रोल तरीके से कम, ऐसी अनर्गल बातें फैलाई जा रही कि पॉपुलेशन कोलेप्स हो जाएगा जैसे कोई जीरो हो जाती है अचानक पॉपुलेशन, यह बोलते डेवलप्ड वेस्टर्न देश जहां महिलाएं पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो गई है उन्हें समझ आ गया कि वो कोई बच्चा पैदा करने की मशीन नहीं है हमारे यहां महिलाएं ना इतनी शिक्षित है ना नौकरी में है वो कैसे मना करेंगी, कुछ लाख यह देश कम हो गया कुछ लाख से वह देश कम हो गया उससे पृथ्वी के क्या फर्क पड़ा हमें अपनी सोचनी है अपने देश की सोचनी है उनकी नहीं रफ एस्टीमेट से हम १४४ करोड़ थे कुछ महीने पहले तक अभी १४५ करोड़ पहुंच रहे हम फूट के पड़ रहे हैं कोलेप्स अगले जन्म तक नहीं होगा और दो बच्चों के स्ट्रिक्ट पॉपुलेशन बिल के बाद भी ७० साल बाद सन २१०० में १३० या १३५ करोड़ पहुंच भी गए तो क्या बुराई है अधा नंगे गरीब भूखे बच्चे तो देश में कम होंगे ना जो सब्सिडी पर पलते हैं, इन पर तो रहम करो मुझे तो समझ नहीं आता कि

एक बच्चे की पॉलिसी पर तो कुछ लोग विरोध कर सकते कह सकते कि लड़के ज्यादा हो जाएंगे, अब मैं बिल्कुल प्रैक्टिकल हूं फालतू फू फा तो करूंगा नहीं कि यह होना चाहिए लिंग परीक्षण पर मौत की सजा कर दो प्रैक्टिकल बात यह है कि अनएजुकेटेड लोग कम पढ़े लिखे लोग वंश चलाने के लिए लड़का चाहते हैं वो बात अलग है कि कौन ८ फीट का है या आईक्यू २०० का है जो कहे भाई मैं बिना वंश के मर गया तो दुनिया से आठ फीट के लोग खत्म हो जाएंगे, लड़की क्या वंश नहीं होती खैर दो बच्चों के स्ट्रिक्ट कानून में क्या आपत्ति है देश का बँटाधार क्यों करना है, एक मूवी आई थी वी शांताराम की दो आंखें १२ हाथ, उसमें कैदी जेल के बाहर भी बेड़ियां पहन के ही सोते हैं क्योंकि आदत हो गई थी, हमें भी इस महंगाई गरीबी बेरोजगारी और भ्रष्टाचार देखने की आदत हो गई है जिसकी प्रॉपर्टी रेट किराए की रेट बढ़ रही उसको भी आदत हो गई है, आज मान लो किसी शहर में एक प्लॉट मिल रहा १ करोड़ में, अगर सन २००० में दो बच्चों की पॉलिसी बनाई होती तो हम होते १०५ करोड़ से बढ़कर करीब १२५ करोड़, १४५ करोड़ तो नहीं होते यही प्रॉपर्टी मिलती ६० लाख में किसका फायदा किसका नुकसान हो रहा सोचो समझ आ रही मेरी बात, कुछ लोगों के लिए दुनिया जाए तेल लेने पैसे आने चाहिए अब वो भी क्या करें रिसोर्सेस पर भयंकर दबाव है और गरीब तो अगर पढ़ा लिखा समझदार होता भरा हुआ पेट होता तो कुछ सोचता वह तो केवल एक उंगली है जो वोट के लिए कहीं लगवानी है बाकी सब मरने के बाद मिलेगा या अगले जन्म में मिलेगा, तो आप लोगों से प्रार्थना है कि षड्यंत्र को समझे इस देश के लिए इस विश्व के लिए खुद के लिए जनसंख्या कानून की मांग रखें.